

[Mr. Deputy-Speaker]

social service for a year for those students who want to qualify themselves for any Degree."

The Resolution was negatived.

Mr. Deputy-Speaker: No time limit has been fixed so far, as the Committee could not meet. One hour would be sufficient.

Shri Bibhuti Mishra: (Bagaha): One and half hours.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member would require 20 minutes for himself. Probably, there may not be many more to support him. He may have his 20 minutes. Another 20 minutes. Another 20 minutes for those who want to speak on the subject; 20 minutes for the hon. Minister. That would suffice.

15.12 hrs.

Resolution re: Naming of Buildings, Schools etc.

श्री विभूति मिश्र (बगहा) : उपाध्यक्ष महोदय, अपने प्रस्ताव को मैं आप के समक्ष उपस्थित करता हूँ जो इस प्रकार है :—

“इस सभा की यह राय है कि सरकारी घन से बनाये गये भवनों, स्कूलों बाँवों, पुलों और नई वस्तियों के नाम किसी ऐसे जीवित व्यक्ति के नाम पर न रखे जायें जिस का सरकारी शासन व्यवस्था से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो, परन्तु ऐसे व्यक्तियों के नाम पर रखे जायें, जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में देश की उन्नति के लिये संघर्ष किया हो अथवा स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया हो।”

इस सदन के सामने आने वाले प्रस्तावों में यह एक नई किस्म का प्रस्ताव है और मैं समझता हूँ कि सरकार को इस सम्बन्ध में

कोई निश्चित नीति अपनानी चाहिये। सरकारी खर्च से स्कूल बनाये जायें, बाँध बनाये जायें, भवन बनाये जायें, पुल बाजार बसाये जायें या और काम किये जायें और अगर उन का नामकरण किसी ऐसे आदमी के नाम के पीछे कर दिया जाये जो शासन व्यवस्था में हो, तो यह उचित नहीं प्रतीत होता है। ऐसा करने से मुझे लगता है इस में परसनेलिटी कलट की बात आ जाती है। यह जरूरी है कि . . .

उपाध्यक्ष महोदय : किसी पार्लियामेंट के मੈम्बर का नाम रखा जाय या नहीं ?

श्री विभूति मिश्र : जी नहीं। सरकार में ऐसे भी आदमी हैं जिन्होंने देश के लिये त्याग किया है, तपस्या की है, यान्त्रायें सही हैं, नाना प्रकार की तकलीफें झेनी हैं, उन के नाम के पीछे इन के नाम . . .

श्री त्यागी (देहरादून) : त्यागियों का नाम, तपस्वियों का नाम रखा जा सकता है।

श्री विभूति मिश्र : उन के नाम पर रखा जाय तो कोई एतराज की बात नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय : त्यागी कहने से त्यागी नहीं हो जाते हैं। नाम उन का और होता है।

गृह कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बातार) : ये नाम के त्यागी हैं।

श्री विभूति मिश्र : जो शासन व्यवस्था में हो, उस के नाम पर उन के नाम नहीं रखे जाने चाहियें। शासन व्यवस्था से उस के अलग होने पर यदि उन के नाम के पीछे उन का नामकरण कर दिया जाय तो ज्यादा सुन्दर होगा। लेकिन इस के बारे में कोई रूल नहीं बनाया जा सकता है। इस का कारण यह है कि आज हिन्दुस्तान में ऐसे

भी आदमी हमारी सरकार में हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिये, इस हिन्दुस्तान को बनाने के लिये नाना प्रकार की तकलीफें और कष्ट भोगे हैं। यदि उन का नाम उन के साथ जोड़ दिया जाये तो कोई एतराज की बात नहीं है। यह जरूर है कि यदि वह शासन व्यवस्था में न रहे तब उस के पीछे उन का नाम आवे तो ज्यादा सुन्दर लगेगा।

यह जो प्रस्ताव है यह केवल केन्द्र पर ही लागू नहीं होगा। इस प्रस्ताव का सम्बन्ध केन्द्र से भी है, प्रान्तों से भी है, म्युनिसिपैलिटीज से भी है, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड्स से भी है, नोटिफाइड एरिया कमेटीज से भी है। जहां कहीं भी सरकार का पैसा या जनता का पैसा खर्च होता है, शासन व्यवस्था में से खर्च किया जाता है, वहां पर किसी चीज का नामकरण हो, उस से मेरे प्रस्ताव का सम्बन्ध है।

यह एक नई बात है और इस के सम्बन्ध में सरकार को एक नीति निर्धारित करनी पड़ेगी और उस नीति को ठीक प्रकार से अमल में लाया जा सके, इस के लिये सरकार को एक कानून बनाना होगा और कानून बन जाने के बाद उस के अनुसार ही सब चीजों के नामकरण करने की व्यवस्था करनी होगी। मैं दूसरे धर्मों की बात तो नहीं जानता, लेकिन हिन्दू धर्म की बात अवश्य जानता हूँ कि जब बच्चा पैदा होता है तो उस का नामकरण जब किया जाता है तो उस के लिये पंडित आते हैं, जो लगन देखते हैं और जिस लगन में उस बच्चे की पैदाइश हुई होती है, उस के अनुसार ही तथा उस पर सोच विचार हो चुकने के बाद ही उस का नामकरण किया जाता है। इन सब चीजों का मिलान करने के बाद ही बच्चे का नामकरण होता है। कोई चीज आप बनाते हैं या कोई कारखाना आप स्थापित करते हैं, उस का नामकरण सुरन्त नहीं कर देना चाहिये।

हमारे कम्युनिस्ट भाइयों ने जब मैं बोल रहा था तो तालियां बजाईं। उन को मैं बतलाना चाहता हूँ कि रूस में स्टालिन के नाम के पीछे एक स्थान का नाम स्टालिनग्राड रखा गया था। वहां पर स्टालिन की मूर्ति रखी गई थी जिस को जीवित रखने के लिये कई प्रकार के मसालों का प्रयोग किया गया था। स्टालिन के मरने के बाद खुश्चेव साहब आये। उन्होंने ने उन की कब्र को खुदवा कर के उन के शव को वहां से कहीं और फिकवा दिया और स्टालिनग्राड तक का नाम बदल दिया गया है। आप सोचें कि आज एक आदमी की गवर्नमेंट है तो कल दूसरे की गवर्नमेंट हो सकती है, आज एक सरकार है तो कल दूसरी सरकार कायम हो सकती है और हो सकता है कि वह नाम बदलने का काम करने लग जायें। इस लिये नामकरण की जो बात है यह बहुत होशियारी से होनी चाहिये। मैं आप को अमरीका का भी एक हवाला देना चाहता हूँ। वहां पर डोमिनिकन रिपब्लिक का जो एक्स डिक्टेटर था उस ने अपने जमाने में रोड्ज के, बिल्डिज वगैरह के नाम अपनी फैमिली के मैम्बर के नाम पर रख दिये। जब वहां की सरकार बदली तो उस ने सब नामों को बदल डाला। इसलिये मैं चाहता हूँ कि सरकार बड़ी छानबीन के बाद ही कोई नाम रखे।

मैं आप को यह भी बतलाना चाहता हूँ कि हमारे यहां जितने भी तीर्थ स्थान हैं, उन सब के नाम किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर नहीं रखे गये हैं। शेर शाह ने कलकत्ते से ले कर कटक तक एक सड़क बनवाई थी जिस को आज ग्रांड ट्रंक रोड कहते हैं, उस सड़क का नाम भी शेर शाह ने अपने नाम पर नहीं रखा। उस सड़क का नाम महा भारत में पाया जाता है। वहां पर भी उस सड़क का नाम किसी के नाम पर नहीं रखा गया है। उन की सफाई देखिये कि कैसे उन्होंने ने काम किया और अपने नामों के साथ उन सड़कों का नाम नहीं जोड़ा। हमारे यहां

[श्री विमूती मिश्र]

शंकराचार्य के चार धाम बनाये और उन में से किसी धाम के साथ अपना नाम नहीं जोड़ा। हमारे यहां चार धाम हैं, द्वारिकापुरी, जगन्नाथपुरी, बद्रीनारायण और रामेश्वरम्। किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर किसी का नाम भी नहीं रखा गया है। उन्होंने ने उस स्थान विशेष के नाम के साथ इन का नाम जोड़ा है।

इसलिये मैं कहना चाहता हूँ कि नामकरण का बहुत महत्व है। मैं चाहता हूँ कि सरकार इस सम्बन्ध में कोई निश्चित नीति निर्धारित करे। मैं यह नहीं चाहता हूँ कि किसी अप्सर के नाम के साथ किसी चीज का नाम जोड़ दिया जाय और जब दूसरी सरकार बने तो उस नाम को झट से बदल कर दूसरा रख दे। इस तरह की चीज हुई है और इस को हम ने अंग्रेजों से सीखा है। एक सड़क का कर्जन रोड नाम पड़ा, एक सड़क का नाम डुपले लेन पड़ा, और इसी तरह से बहुत सी सड़कों के नाम पड़े। अंग्रेज लोग चाहते थे कि हमारा नाम जारी रहे और हिन्दुस्तान के लोग हमारे नाम रटा करें। अंग्रेजों के जाने के बाद हम ने कुछ नामों को बदला है। हमें ऐसे लोगों के नाम पर सड़कों आदि के नाम रखने चाहियें थे जिन्होंने देश के लिये त्याग और बलिदान किये। अगर हम शिवाजी का नाम रखते तो समझ में आ सकता था, राणा प्रताप का नाम रखदे तो समझ में आ सकता था, टीपू सुलतान का नाम रखते तो समझ में आ सकता था।

एक माननीय सभस्य : यह व्यक्तिगत हो जाता।

श्री विमूति मिश्र : मेरे कहने का मतलब यह है कि ऐसे आदमियों के नाम पर नाम रखे जायें जिन्होंने एक सिद्धान्त के लिये काम किया हो। फर्ज कीजिये कि किसी चीज का नाम गणेश शंकर विद्यार्थी के

नाम पर रखा जाता क्योंकि जिन्होंने साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिये अपनी जान दी। अगर उन के नाम पर कोई नाम रखा जाता तो उचित होता क्योंकि उन्होंने एक सिद्धान्त के लिये काम किया। इस के अलावा और भी बहुत से लोग हमारे देश में हुए हैं जिन्होंने कांग्रेस की स्थापना की, हिन्दुस्तान की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी, जिन्होंने ऐसा करने में अनेकों यातनायें झेलीं, उन के नाम पर नाम रखे जाते तो समझ में आ सकता था क्योंकि वे सरकार में नहीं हैं। मेरा कहना यह है कि जो सरकार में नहीं रहे उन के नामों पर नाम रखे जायें। हां, सरकार में भी कुछ आदमी ऐसे हैं जिन के नाम के बारे में किसी को ऐतराज नहीं हो सकता, अगर उन के नाम पर किसी चीज का नाम रख दिया जाय तो किसी को आपत्ति नहीं होगी। लेकिन ऐसा भी हो रहा है कि कोई आदमी आज किसी मिनिस्ट्री में चला गया, उस की कोई त्याग तपस्या नहीं है लेकिन चूँकि वह शासन व्यवस्था में चला गया इसलिये उस के नाम पर चीजों के नाम रख दिये जाते हैं। उस का त्याग तपस्या केवल यही है कि वह सरकार में चला गया। इस पर मुझे ऐतराज है।

उपाध्यक्ष महोदय, आप ने कहा कि एम०पी० लोगों के नाम पर भी नाम रखे जायें। जब यह डिमाट्रिक सोशलिज्म है तो उस में हम भी आते हैं और मिनिस्टर भी आते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य यह तो सोचें कि जिन्होंने त्याग किया था उन का नाम वह माया के साथ जोड़ना चाहते हैं।

श्री विमूति मिश्र : तो मेरे कहने का मतलब यह है कि जिन का कोई त्याग नहीं है और जो केवल शासन व्यवस्था में चले जाते हैं, उन के नाम पर चीजों के नाम न रखे

जायें। हम देखते हैं कि जिन का कोई त्याग नहीं है वे मिनिस्टर बन जाते हैं और जिनका त्याग है वे मेम्बर ही बने रहते हैं, और ऐसे भी आदमी हैं जिन का त्याग बहुत ज्यादा है लेकिन जो मेम्बर भी नहीं हैं। लेकिन उन लोगों के नाम पर चीजों के नाम नहीं रखे जाते। आज ऐसे अनेकों लोग हैं जो चाहे रिबोल्यूशनरी पार्टी में रहे हों या कांग्रेस में रहे हों, जिन को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान में लूटा गया, पीटा गया, उन के नाम नहीं आते। मसलन् भगन सिंह का नाम नहीं लिया जाता है। आज दिल्ली में भगन सिंह के नाम पर किसी जगह का नाम नहीं है।

एक माननीय सदस्य : गोल मारकेट का नाम उन के नाम पर है।

श्री विभूति मिश्र : होगा लेकिन मैं ने नहीं देखा। मैं कहना चाहता हूँ कि ऐसे बहुत से आदमी हैं जिनहों ने देश के लिये बलिदान किया और जिन के नाम पर चीज के नाम रखे जाने चाहियें। मुझे प्रसन्नता होगी यदि महात्मा गांधी के नाम पर किसी जगह का नाम रखा जाय या तांत्या तोपे के नाम पर रखा जाय। ऐसे बहुत से आदमी हैं जिन के नाम पर अगर किसी जगह का नाम रखा जाय तो किसी को ऐतराज नहीं हो सकता लेकिन एक बात है कि अगर कोई सरकार में रहा है इसी कारण उस का नाम किसी ऐसी चीज पर रखा जाय जिस में सरकार का पैसा खर्च हुआ है तो मुझे ऐतराज होगा। इस में कोई खास इधिकल सिद्धान्त की बात नहीं आती। मैं चाहता हूँ कि चीजों के नाम रखने के कार्य के पीछे कोई सिद्धान्त होना चाहिये या सरकार की तरफ से कोई कानून हो कि जिस ने किसी सिद्धान्त के लिये काम किया हो उस के नाम पर किसी जगह का नाम रखा जाय क्योंकि वे लोग सरकार में नहीं हैं। यह नहीं होना चाहिये कि जो शासन व्यवस्था में जनता की सेवा

करने के लिये आया है, उस के नाम पर किसी चीज का नाम रखा जाये। उस उमूल के साथ मैं हूँ कि सरकार को इस मामले पर, अपनी एक नीति निर्धारित करनी चाहिये। अभी हमारे देश का भागें बहुत उत्थान होगा बहुत से काम होंगे, बहुत सी इमारतें बनेंगी, बहुत सी नहरें खोदी जायेंगी, बहुत सी और चीजें बनेंगी। इसलिये मैं चाहता हूँ कि हमारी सरकार अभी से अपने को इस मामले में सज्जत कर ले और भागों से किसी चीज का नाम किसी आदमी के नाम पर इसीलिये न रखा जाय कि वह आदमी सरकार में था।

अभी दिल्ली में एक शंकर मारकेट है। कोई चीफ कमिश्नर साहब दिल्ली में शंकर साहब थे। उन के नाम पर इस मारकेट का नाम रख दिया गया। अगर इस का नाम किसी ऐसे व्यक्ति के नाम पर रखा गया होता जिसन देश के लिए त्याग या तपस्या की होती तो उचित था। लेकिन एक ऐसे आदमी के नाम पर उस का नाम रखा जाय जोकि एक सरकारी अहिंसे पर रहा है, जिस ने सरकार से अपने काम के लिये तनखाह ली है और अब वह दूसरी जगह बदल गया तो रिटायर हो गया, मेरी राय में उचित नहीं है।

आप ने एक स्थान का नाम चाणक्य-पुरी रखा है जिस को अंग्रेजी में डिपलॉमैटिक एनक्लेव कहते हैं। लेकिन चाणक्यपुरी के भागों सन् १९५१ में कांग्रेस हुई थी और उस स्थान का नाम सत्यवती नगर रखा गया था। उन्होंने ने बहुत त्याग तपस्या की थी, अगर उन के नाम पर उस स्थान का नाम रखा जाता तो ज्यादा शोभा पाता। लेकिन चाणक्य का नाम रखा तो भी ठीक है क्योंकि वे देश के बड़े विद्वान् थे।

तो मैं यही चाहता हूँ कि इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार का इस बारे में कोई उमूल होना चाहिये और उस के पीछे

[श्री विभूति मिश्र]

सरकार की ताकत होनी चाहिये। मैं चाहता हूँ कि इस में परसोनेलिटी कल्ट नहीं आना चाहिये क्योंकि इस के चलते हिन्दुस्तान में गुरुडम हो जायगी। मैं भी ब्राह्मण जाति का हूँ। आज हमारे गुण अवगुण को न देख कर लोग हमारे पीर छू कर हम को प्रणाम करते हैं। इस प्रकार का गुरुडम का तरीका देश में पहले से चल रहा है जोकि अब समाप्त होना चाहिये। मैं नहीं चाहता कि यह गुरुडम का तरीका देश में आगे रहे। अगर किसी ने त्याग और बलिदान किया हो उस के नाम पर किसी चीज का नाम रखा जाय तो यह एक अच्छी परम्परा होगी, जैसे कि इंजिन के कारखाने का नाम श्री चित्तरंजन दास के नाम पर रखा गया है। वह देश के बड़े नेता थे और उन्होंने देश के लिये बड़ा त्याग किया। उन के नाम पर इस कारखाने का नाम होना बहुत अच्छा है। उन का सरकार से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। उन के नाम पर जो नाम रखा गया उस में किसी को कोई ऐतराज नहीं है। सरकार में भी ऐसे आदमी हो सकते हैं जिन की त्याग और तपस्या रही हो, उन का नाम भी किसी चीज के साथ जोड़ा जा सकता है लेकिन इस में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि उन के साथ दूसरे जिन की कोई तपस्या या त्याग नहीं है वे भी न चले आवें। इसलिये मैं गृह मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूँ कि इस सम्बन्ध में कोई निश्चित नीति निर्धारित करें और कोई कानून बनावें।

इस सम्बन्ध में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। अगर कोई विज्ञान वेत्ता सरकार की सेवा में हो या कोई डाक्टर हो या वैद्य हो जिस ने किसी चीज का आविष्कार किया हो तो सरकार से पूछ कर उस का नाम किसी चीज के नाम के साथ जोड़ा जा सकता है, इस में मुझे कोई ऐतराज नहीं होगा। जैसे हमारे सी० एच० भावा हैं जोकि एटामिक इनरजी कमीशन में काम करते हैं। अगर वह

एटामिक इनरजी के क्षेत्र में कोई आविष्कार करते हैं तो उन के नाम पर किसी चीज का नाम रखा जा सकता है, लेकिन सरकार से पूछ कर। इस में मुझे कोई ऐतराज नहीं होगा। अगर किसी विज्ञान वेत्ता के नाम पर, किसी स्पेशलिस्ट के नाम पर जिस ने अपने क्षेत्र में कोई आविष्कार किया हो सरकार की अनुमति से किसी चीज का नाम रख दिया जाय तो इस में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। यह तो अच्छा होगा।

इस के अलावा मान लीजिये कि किसी आदमी ने कोई खास डिक्शनरी बनायी। वह अगर सरकारी सरविस में भी हो तो अगर उस का नाम सरकार से पूछ कर किसी चीज से सम्बन्धित कर दिया जाय तो कोई ऐतराज नहीं होगा क्योंकि वह एक खास चीज का जानने वाला है और उस ने मेहनत कर के एक खास चीज निकाली है। लेकिन अगर कोई आदमी सरकार में मंत्री हो गया है उस के नाम पर किसी बांध का या पुल का नाम रख दिया जाय, जोकि सरकारी पैसे से बना है, तो यह उचित नहीं माना जा सकता।

इसलिये मैं अपने प्रस्ताव को पेश करते हुए सरकार से आग्रह करना चाहता हूँ कि सरकार इस सम्बन्ध में कोई कानून बनाये या ऐसी नीति निर्धारित करे जिस के मुताबिक इन सब चीजों का नामकरण हो तार्कि अगर आगे जा कर इस में किसी को किसी तरह का ऐतराज न हो और दिक्कत न पैदा हो।

Mr. Deputy-Speaker: Resolution moved:

"This House is of opinion that the buildings, schools, dams, bridges and new colonies constructed out of the Government funds should not be named after any

living person connected with the Government's machinery in any form but after these persons who fought for the uplift of the country in any sphere or participated in the freedom struggle."

श्री सरजू पाण्डेय (रसड़ा): उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूँ। माननीय सदस्य ने बताया कि वह इस प्रस्ताव को इसलिये लाये हैं कि देश में बढ़ते हुए परमोनैलिटि कल्ट को रोका जाय। उन्होंने ने अपनी स्पीच में स्टालिन के बारे में जो फरमाया मैं नहीं जानता कि उन को ये खबरें कहां से मिलीं। हम को तो ऐसी किसी बात का पता नहीं है कि स्टालिन की लाश को खोद कर फेंक दिया गया। न मालूम कहां से ताजा सूचना उन के पास आई है जो मुझे नहीं मालूम। लेकिन एक बात जरूर है कि हम कम्युनिस्ट नहीं चाहते कि व्यक्तिगत पूजा हो और इस प्रस्ताव में मुख्य रूप से व्यक्ति पूजा का विरोध किया गया है। यह बात सही है कि उन लोगों ने जिन्होंने कि देश के लिये कुछ किया है अगर उन के नाम पर संस्थाओं का नाम रखा जाता है तो कुछ समझ में आता है। मगर ज्यादातर यह देखने में आता है कि आम तौर से जो सरकारी नौकरियों में हैं या बड़े सरकारी ओहदों पर हैं उन के नाम पर भी ऐसी जगहों के नाम रखे जाते हैं जो सचमुच मैं समझता हूँ कि गलत है। लखनऊ में चले जाइये वहां पर किन्हीं साहब के नाम पर एक बरालिगठन होटल मौजूद है। अंग्रेजों के नाम पर सड़कों के नाम रखे गये हैं, इमारतों के नाम रखे गये हैं। जिन को कि देश के लिये या किसी संस्था के लिये कोई देन नहीं है ऐसे लोगों के नाम पर संस्थाओं के नाम रखना मैं समझता हूँ कि कतई तौर पर गलत है। जैसाकि प्रस्तावक महोदय ने कहा है मैं उन से इस बारे में सहमत हूँ कि सरकार को इस के लिये कानून बनाना चाहिये। हम योग्य व्यक्ति की पूजा के

विरुद्ध नहीं हैं। दुनिया में हर जगह जो बड़े लोग हो गये हैं उन की पूजा हुई है और यह हटायी नहीं जा सकती और न ही कम्युनिज्म में इस के लिये कोई बाधा है कि व्यक्ति की पूजा न की जाय। मगर व्यक्ति की पूजा के नाम पर ऐसे लोगों की पूजा करने की कोशिश की जाती है जोकि दर-असल पूजा के पात्र नहीं हैं। आम तौर से जिन के हाथ में पावर आती है वह इस तरीके की कोशिश करते हैं। चाहे देश के प्रति उन का कोई काम हो या न हो मगर वह शासन के बल पर पूजा कराते हैं और हमारे देश में तो बहुत ज्यादा शासकों की पूजा होती है और आज भी होती है। सरकार पैसा देती है और शासक लोग अपने अपने नाम पर स्कूल, कालिजों और सड़कों का नाम रखती है और इस तरह से अपने व्यक्तित्व का बेजा फायदा उठाते हैं। इसलिये मैं समझता हूँ कि इस पर कोई लम्बी बहस की जरूरत नहीं है। यह बात सही है और इस प्रकार के प्रस्ताव का इस सदन में अनुमोदन होना चाहिये और मैं चाहता हूँ कि इस तरह के नाम नहीं रखे जाने चाहिये। जिन लोगों ने देश की कोई सेवा न की हो और खास तौर पर ऐसे लोग जोकि सरकारी कर्मचारी हों, सरकारी पदों पर हों अगर उन के नाम पर भवनों अथवा सड़कों का नाम रखा जाता है तो लाजिमी तौर पर सरकार को कानून बना कर उसे अवैध बना देना चाहिये। ताकि देश में ऐसे लोगों को प्रोत्साहन मिले जोकि देश की सेवा बगैर पैसे लिये करते हैं। वे लोग जोकि बिना किसी स्वार्थ के निस्सवार्थ भाव से देश की सेवा करते हैं उन के लिये इतना तो किया हो जाय ताकि इतिहास में उन का नाम अमर हो जाय और आगे आने वाली पीढ़ियां उन को जानेंगी कि उन्होंने ने देश के खातिर इतनी कुर्बानी दी। मैं चाहता हूँ कि ऐसे योग्य व्यक्तियों को ही प्रोत्साहन मिलना चाहिये और उन के नाम को अमर बनाने के लिये सड़कों और भवनों आदि के नाम उन के नाम

[श्री सरजू पाण्डेय]

पर रक्खे जायें ताकि इतिहास में उन का नाम अमर हो जाय । सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिये जिस से इस तरह के लोगों को प्रोत्साहन मिले ।

Shri Tyagi: May I move for closure?

Mr. Deputy-Speaker: I think I will accept closure and call upon the hon. Minister.

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): Why closure?

Mr. Deputy-Speaker: No hon. Member stood up to speak.

Pandit D. N. Tiwari (Kesaria): I want to oppose this Resolution.

Mr. Deputy-Speaker: He has got up very late.

Pandit D. N. Tiwari: The hon. Member sat down only just now (*Interruptions*).

Shri Datar: He may be allowed five minutes, Sir.

Mr. Deputy-Speaker: Yes.

पंडित द्वा० ना० तिवारी (केसरिया):
उपाध्यक्ष महोदय, मुझे दुःख है कि मैं अपने मित्र के प्रस्ताव से सहमत नहीं हूँ

उपाध्यक्ष महोदय : आपस में मशविरा करके ही तो प्रपोज नहीं किया था ।

पंडित द्वा० ना० तिवारी : अगर मशविरा किया होता तो मैं समर्थन करता । मैं उन से कह रहा था कि यह प्रस्ताव नामुमकिन है और समयानुकूल नहीं है । अपने प्रस्ताव को पेश करते हुए उन्होंने जो दलील दी उस से भी मैं सहमत नहीं हूँ । हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के दौरान जिन्होंने त्याग और तपस्वा की उन्हीं लोगों के नाम पर सड़क और

भवन आदि बनाये जायें और बाकी लोगों के नाम पर न बनाये जायें यह सिद्धान्त गलत है । अब जहां तक देशसेवा करने का ताल्लुक है तो श्री इंडिपेंडेंस डेज में ही की हुई देशसेवा की बात नहीं है । देश सेवा तो हमेशा रोजाना होती है और की जाती है । जो मनुष्य हंसते हंसते फांसी पर लटक गया उसका नाम हमेशा के लिए इतिहास में अमर हो गया लेकिन उससे भी अधिक ऊंचा मैं उस मनुष्य को समझता हूँ जो कि देश के खातिर तिल तिल कर के मरते हुए सेवा करता है और जोश में न आकर अपने काम को साधारण, तौर पर चलाता है लेकिन सदा उसका दृष्टिकोण देश सेवा की तरफ रहता है । तो नाम होना दूसरी चीज है काम कुछ और है । भारतवर्ष इतना बड़ा देश है कि रोज ही कुछ सड़कें, मकान तथा संस्थाएं बनती हैं और उनका नामकरण होता है । अब यह काम अगर गवर्नमेंट के जिम्मे दे दिया जाय कि गवर्नमेंट बराबर इस को देखा करे कि कहां किस का नाम होता है और कहां नहीं होता है और नामकरण के मामले में हस्तक्षेप करे और कहीं पर वह लिखा पढ़ी करके अमक के नाम पर नामकरण न होने दे तो यह इतना लम्बा काम हो जायगा कि इसके लिए आपको एक अलग डिपार्टमेंट ही खोलना पड़ेगा । अब गवर्नमेंट के ऊपर वैसे ही काम का काफी भार है और उस पर यह काम भी लाद दिया जाय और जिसके लिए कानून बनाने की बात हो रही है तो वह कानून क्या होगा ? उसमें कितने इफ्स और बट्स होंगे और कितने एक्सेप्शंस होंगे । जैसे कि पंडित जी ने खुद कहा कि किन लोगों के नाम पर स्थानों आदि का नाम रक्खा जा सकता है और किन के नाम पर नहीं रखा जाना चाहिए और कितने उसमें एक्सेप्शंस होंगे । अब यदि कोई सरकार में आ गया मंत्री बन गया या सरकार के किसी अहोह्द पर आ गया तो ऐस करके उसने कोई पाप तो नहीं किया जो उसके नाम पर किसी सड़क भवन और संस्था आदि का नाम न रक्खा जाय । हालांकि

उसका आजादी की लड़ाई में कोई कंटीव्यूशन न भी हो लेकिन आज जब वह अच्छा काम कर रहा है और उस की वजह से उस स्थान के लिए या प्रान्त के लिए कोई अच्छा काम हो गया और लोगों ने समझा कि इस अच्छा काम करने के बदले हम लोग उस के नाम पर ही उस का नाम रख दें तो उस में बेजा क्या है ? मैं तो समझता हूँ कि नामकरण किसी चीज की एक ऐसी बात है जिसे कि वहाँ के लोगों पर ही छोड़ देना चाहिए कि वे क्या चाहते हैं। यदि उनके दिल में किसी अफसर के लिए या किसी मिनिस्टर के लिए सद्भावना है, उस के कामों को वे अच्छे तरीके से जानते हैं और उनको प्रेरणा मिली है तो यदि वे चाहें तो उस व्यक्ति के नाम पर वे किसी चीज का नामकरण कर सकते हैं। इस की उन्हें छूट होनी चाहिए। इस के लिए कोई कानून नहीं बनना चाहिए और उसको ऐसा करने से मना न किया जाय। इसके लिए उन्हें सरकार से पूछने और उसकी इजाजत लेने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन यदि यह नामकरण करने का काम सरकार के जिम्मे कर दिया गया तो जैसी सरकार के वहाँ पर हालत है कि रोजमर्रा की कार्यवाही में तो महीना, दो महीना, छै० महीने और साल लग जाता है तो यह नामकरण का काम कोई महत्व की चीज तो है नहीं उसको कोई एम्पॉटेंस देना नहीं और वह वर्ष दो वर्ष और चार वर्ष तक अटक पड़ा रहेगा और उसका फँसला ही नहीं होगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि गवर्नमेंट पर जो यह यह नई चीज लादने जा रहे हैं यह अनुचित मालूम होती है, असामायिक मालूम होती है और इसकी कोई जरूरत देश में नहीं है। अब जो प्रस्तावक महोदय ने रूस का उदाहरण दिया और बतलाया कि वहाँ यह हुआ और अमुक जगह यह हुआ तो उसमें तो कोई नई बात नहीं है वह तो हुआ ही करता है। उससे तो मालूम होता है कि लोगों की वहाँ ऐसी भावना नहीं थी कि यह चीज हो। कोई चीज जबर्दस्ती की गई और उसको पीछे लोगों ने बदल दिया। अब अपने देश की ही बात से नीजिये। इमारे

देश में बहुत सी सड़कों और स्थानों आदि के नाम विदेशी व्यक्तियों के नाम पर अंग्रेजी शासन काल के समय रख दिये गये थे लेकिन लोगों की भावनाएँ उसके खिलाफ थीं। लोग नहीं चाहते थे कि ऐसा हो लेकिन अंग्रेज शासकों के दबदबे से लाचार थे लेकिन बाद में हमने देखा कि स्वाधीन होने पर उनको बदला गया। इसके बरअक्स बहुत सी सड़कों के नाम जो कि हिन्दुस्तानियों के नाम पर रखे गये थे उनके नाम बदलने की किसी ने चर्चा नहीं की। जो नामकरण प्रेम के आधार पर होता है उसे बदलने की कोई बात उठती ही नहीं है और कहीं इसके दुक्के बदल भी दिये जायें तो उसमें कोई ऐसी असाधारण चीज प्रकट नहीं होती है कि जिसके लिए कोई छानबीन या जांच पड़ताल आवश्यक हो...

श्री त्यागी (देहरादून) : नाम क्यों बदलते हो। नाम का बदलना एक हलकी बात है। अंग्रेज का भी हो भी तो भी उसको रक्खो उसको बदलते क्यों हो।

पंडित द्वा० ना० तिवारी : अब मैं इसमें त्यागी जी से सहमत नहीं हूँ। वह तो हमारी गुलामी के चिह्न हैं और उनको तो जाना ही चाहिए।

श्री त्यागी : वह इस बात की यादगार हैं कि अंग्रेजों का राज्य जो हम पर था उस विदेशी शासन को समाप्त करके हम आजाद हुए हैं।

पंडित द्वा० ना० तिवारी : जी नहीं वह इस बात की यादगार हैं कि हम लोग गुलाम थे और यह कि हमें जबर्दस्ती गुलाम बनाया गया था। अब चूँकि हम उस गुलामी से छुटकारा पा गये हैं इसलिए हम उन गुलामी के निशानों को मिटा देंगे।

[पंडित द्वा० ना० तिवारी]

आप ने देखा होगा कि हमारे देश में सड़कों पर जो विदेशी मूर्तियाँ स्थापित हुई थीं वह धीरे धीरे हटाई जा रही हैं और उनको म्यूजियम में रक्खा जा रही हैं। उसी तरह इन नामों को भी ऐसी जगहों पर रख दिया जाये, जहाँ लोगों को उन से सम्पर्क न हो। अगर नाम किसी देवता, किसी वीर सेनानी, किसी अच्छे काम करने वाले या किसी स्थानीय व्यक्ति के नाम पर रखे जायें, तो इस में किसी को उज्र नहीं होना चाहिए। इस बारे में कानून नहीं बनाना चाहिए और गवर्नमेंट को इस में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, यही मेरा सुझाव है।

Shri Datar: Mr. Deputy-Speaker, Sir, while it is possible to understand and, to some extent, appreciate the underlying principle of this Resolution, the manner in which it has been brought before the hon. House is hardly acceptable.

In the first place, what the hon. Member has stated is of a rather limited nature in the sense that there are other cases where a name will have to be according to the people's desire. I understand fully the hon. Member's desire that there ought not to be the naming of any institution or road etc. after the personality cult. That is a most objectionable form.

Secondly, we should see whether there has been any abuse in this respect; whether there has been any such instances.

These are the two questions that have to be considered in this respect. If we take into account the manner in which certain names have been given to institutions or roads etc., then, I feel we are not following a personality cult at all; nor has there been any abuse, so far as the purpose of this Resolution is concerned.

I have before me the names of certain roads, markets or institution sup-

plied to the hon. House in answer to a question put by an hon. Member. You will find therefrom that there has been no abuse; and so far as the names are concerned, they are perfectly of an unexceptionable nature.

The hon. Member, in his Resolution, has fixed two qualifications. One is that those who have worked for the uplift of the country and those who have participated in the freedom movement but are not at present living. These are the two qualifications for naming any of these things. But, there might be cases where we might go even beyond the orbit of a particular nation.

I have here before me the names of some persons. They include the names of persons of international importance like Tolstoy. So far as Tolstoy is concerned, he was one of the greatest world figures, a man who wrote for the propagation of harmony and peace. And, therefore, would it not be in the interests of the nation itself if some people in this country think that certain institutions should be named after them?

Then, there are other names which are perfectly unexceptionable. A number of them are of political significance. In addition, we have got names like Tansen; we have got the name of Chandragupta also. There are institutions and roads named after them. We have got the names of Dadabhai Naoroji, Srinivasa Sastri. We know that Srinivasa Sastri did not belong to the Congress party at all; but his name has been associated with Delhi in this respect. That shows the largeness of the minds of those persons who have been responsible for these names.

We have got the name of Khan Abdul Ghaffar Khan. (*Interruptions*). There are certain other names. Most of them are of departed leaders. Should or should not the names of

those who were leaders in the national movement but who are living be associated with these?

Here we have got a National Government composed of the representatives of the people and a large number of those who are manning the governments either at the Centre or in the States had been great leaders in the movement for national freedom. Therefore, the question arises as to whether merely because a great personage is living—I am happy there are certain persons who are living with us—should we not accept such names if we think that their names should be associated with certain associations or certain roads, etc? Take for instance, the greatest name that we have before us: the name of our revered President. In Delhi his name has been associated with certain institution or some road. Thereby you will find that that institution has received a unique honour. If the hon. Member's resolution were to be accepted, that name could not be taken into account at all. Therefore, I should like to submit that the hon. Member should not confine the naming of these streets, etc. after those who had worked for the uplift of the country or who had participated in the freedom struggle. There are other cases also. Take, for instance, Tan-Sen.

Shri Braj Raj Singh: He is not living.

Shri Datar: He is a great figure in the field of art. There is no question of any uplift of the country coming here except that the whole country has become great because we have got such great names. There are other names also, as I pointed out. Excepting one case where a particular market was named after the former Chief Commissioner there have been no other names that could suggest to the hon. Members. The Government's policy was made clear long ago by the Prime Minister himself because the Prime Minister was receiving numerous requests for naming institutions

and other associations after him. In 1957 he made it very clear and a Press note was issued on the 12th November, 1957 in which the Prime Minister had expressed his disapproval of the practice of naming institutions, etc. after the names of living personages. The Prime Minister anticipated five years ago what the hon. Member had in view. This is what has been stated then:

"The Prime Minister desires that no request should be made to him for using his name in connection with any institution. In a message to the Press, he says: From time to time I receive requests for the use of my name in connection with some institution. I shall be grateful if no such requests are made. I am firmly of the opinion that names of living persons should not be utilised in this way."

Therefore, Government's policy is very clear and so it would be rather difficult to accept the resolution in the form in which it has been brought. The hon. Member may rest satisfied that the Government are also with him so far as the underlying principle is concerned. In these circumstances, with this discussion, I hope the hon. Member will be satisfied and will withdraw his Resolution.

Shri Tyagi: Is it the policy of the Government now to name these roads and places after some persons? Previously the names of roads etc. were according to the geographical situation. Are the names such as Paltan Bazar and Chandni Chowk to go now?

Shri Datar: All the names remain as they are. I agree with my hon. friend that if names were to change so often and so suddenly they would create a lot of difficulties and embarrassment.

Shri Tyagi: I want to know if the geographical names are to be tabooed for the future.

Shri Datar: There is no question of tabooing anything at all. May I point out to the hon. Member that the names remain as they are, and whenever there are any requests made in this respect, the Government considers the whole matter, and as far as possible Government are generally in favour of maintaining the present names.

श्री विभूति मिश्र : मैं सब से पहले अपने मित्र पंडित तिवारी जी को जवाब देना चाहता हूँ ।

उपाध्यक्ष महोदय : आखिरी बात कहिये जो कहनी है ।

श्री विभूति मिश्र : मैं वह भी कहूंगा । लेकिन उससे पहले मैं यह कहना चाहता हूँ कि तिवारी जी ने देरी की बात कही है और पैसे का जिक्र किया है । उन्होंने कहा है कि फाइलों के इधर उधर आने जाने से देरी हो जाएगी । यह बात सुन कर मुझे एक कहावत याद आ गई है । एक रूई धुनने वाला था । उसने बड़ा ढेर रूई का देखा और घबरा गया और कहने लग गया कि कौन इसको धुनेगा । वही बात आपकी है । आपको क्या फिक्र है । कई अरब रुपये का आपका बजट है और इस काम के लिए फाइलें आने जाने की आपको क्यों चिंता हो गई है । रोज के रोज यह काम भी होता जाएगा और आपको घबराने की कोई जरूरत नहीं है ।

फांसी पर जो लटकता है उससे आप इसका मिलान करते हैं । मान लीजिये कोई मिनिस्टर है, वह ननस्वाह पाता है, पैसा पाता है और सरकारी काम करता है । अगर वह अच्छा काम करता है तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि अच्छा काम करने के लिए ही वह इस पद पर नियुक्त होता है । अगर किसी ने कोई अच्छा काम किया है तो उसका उसन पैसा पाया है, मन्नाबजा पाया है ।

लेकिन जो जा कर फांसी पर लटक जाता है देश की खातिर न कि पैसे की खातिर उससे इसका मिलान करना यह कोई ठीक मिसाल नहीं है ।

स्थानीय लोगों के हाथ में इस चीज को देने की बात आप करते हैं । मैं कहता हूँ कि अगर इस चीज को भी स्थानीय लोगों के हाथ में दे दिया जाए तो उनके बीच भी आपस में इसको ले कर झगड़े होने लगेंगे जैसे अब डिस्ट्रिक्ट बोर्डिंग में और म्यूनिसिपैलिटियों में होते हैं । सैटर एक पवित्र चीज है । यहां पर हाई तबके के लोग हैं । हम बड़े बड़े काम कर रहे हैं, भाखड़ा बांध हमने बनाया है, गंडक योजना बन रही है और उस पर काम हो रहा है, इसी तरह में दूसरे प्रान्तों में कई बड़े बड़े निर्माण के कार्य हो रहे हैं, मैं उनके बारे में कह रहा था । छोटे मोटे कार्यों के लिए जिन में हजार या दो हजार या दस हजार खर्च आता है, उनकी मुझे चिन्ता नहीं है । इस वास्ते जो इन्होंने कहा है कि स्थानीय लोगों के हाथ में इसको दे दिया जाए, उससे मैं इतिफाक नहीं करता हूँ ।

माननीय मंत्री जी के जवाब को मुन कर मुझे एक उदाहरण याद हो आया कि जहां जहां धृआ देखा उन्होंने समझा कि अग्नि है । एक शंकर मार्किट का उदाहरण ही मैंने नहीं दिया कई उदाहरण दिए हैं और मैं और भी उदाहरण दे सकता था लेकिन मुझे समय कुल बीस मिनट का दिया गया था और उसमें मैं और ज्यादा उदाहरण कहा से देता । सेंट्रल गवर्नमेंट में कोई अफसर हो जो कि तनस्वाह पाता हो और उसने कोई निर्माण का काम करवाया हो तो उसके पूर्ण हो जाने पर अगर वह उसका नाम अपने नाम के साथ जोड़ देता है तो यह अच्छा नहीं लगता है ।

मेरे प्रस्ताव को माननीय मंत्री जी ने समझा नहीं प्रतीत होता है । मैंने स्पष्ट अपने प्रस्ताव में कहा है कि इनके नाम ऐसे व्यक्तियों के

नाम पर रखे जायें जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में देश की उन्नति के लिए संघर्ष किया हो तथा संग्राम में भाग लिया हो। मैं ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि राष्ट्रपति जी ने नाम के पीछे किसी चीज का नामकरण नहीं होना चाहिए। मैं ने अपने भाषण में कहा है कि ऐसे लोग जिन्होंने तपस्या की है त्याग किया है और आज सरकार में हैं, उनके नाम रखने चाहिये लेकिन ऐसे लोगों के नाम नहीं रखनी चाहिए जिन्होंने न तपस्या की हो और न कोई त्याग किया हो बल्कि केवल मंत्री किसी तरह से बन गये हों त्यागियों की संख्या रोज-ब-रोज, उपाध्यक्ष महोदय, कम हो रही है (Interruptions) इसलिए मेरा ख्याल है . . .

उपाध्यक्ष महोदय : त्यागी अगर एक हो तो वह भी बहुत है, आप ज्यादा न करिये।

श्री विभूति मिश्र : मैं यह नहीं कहता कि आगे हमारे देश में त्यागी पैदा नहीं होंगे। त्यागी आगे भी पैदा होंगे और ऐसे ऐसे भी होंगे जो हम से ज्यादा त्याग करेंगे और उनके नाम पर और नाम रखे जायें तो किसी को कोई एतराज नहीं होगा। जिन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए काम किया है और जो चाहे आज जिन्दा हैं, उनके नाम के पीछे उनके नाम अगर रख दिये जाते हैं तो कोई एतराज की बात नहीं है। फर्ज कीजिये हमारे ऊपर कोई चढ़ाई करता है और हमारी सीमा पर जो हमारे जवान हैं या दूसरे लोग हैं वे उसका ही मुकाबला करते हुए वीर गति को प्राप्त हो जाते हैं, तो उनके नाम के पीछे भी ऐसी चीजों के नाम रखे जा सकते हैं। कैसा त्याग किया हो, कैसी तपस्या की हो इसका लेखा जोखा सरकार कर सकती है।

यह सही बात है कि हमारे प्रधान मंत्री परसनैलिटी कल्ट के खिलाफ हैं। चूँकि वह इसके खिलाफ हैं, इसीलिए देश में सारा काम चल रहा है, बड़ी खूबी के साथ चल रहा है।

वह महान नेता है। अगर वह तपस्वी और त्यागी नहीं होते तो दूसरी ही हालत आज हिन्दुस्तान की होती। उनके बल और बूते पर ही सारी चीज चल रही है।

यहाँ पर टालस्टाय का नाम लिया है, रूसी का नाम लिया गया है ह्यूम साहब का नाम लिया गया है जो कि कांग्रेस के जन्मदाता थे। इन सब के नाम के पीछे इन चीजों के नाम रखे जाने को किसी को एतराज नहीं है। एतराज इस बात से है कि नामकरण को आप सस्ता न करें। आपको कानून बनाना होगा ताकि बहुत मोच विचार के बाद ही किसी चीज का नामकरण किया जा सके।

उपाध्यक्ष महोदय : अब क्या आप अपने प्रस्ताव को वापिस लेते हैं या नहीं लेते हैं?

श्री विभूति मिश्र : वापिस लेता हूँ।

The resolution was, by leave, withdrawn.

15.47 hrs.

RESOLUTION RE: NATIONAL INTEGRATION DAY

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर) :
 उपाध्यक्ष महोदय, मैं

उपाध्यक्ष महोदय : इसके लिए भी समय नियत नहीं किया गया है। क्या ४५ मिनट इसके लिए काफी होंगे?

कुछ माननीय सदस्य : आधा घंटा काफी है।

श्री स० मो० बनर्जी : राष्ट्रीय एकता दिवस सम्बन्धी यह प्रस्ताव है।

उपाध्यक्ष महोदय : आपको पंद्रह मिनट काफी होंगे?

श्री स० मो० बनर्जी : पंद्रह सोलह मिनट तो मुझे चाहियें।

उपाध्यक्ष महोदय : बहुत अच्छा आप ले लीजिये।